SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दृष्टिकोण का योगदान

राजेश कुमार, शोधार्थी, दर्शनशास्त्र विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
राजेश कुमार, शोधार्थी
E-mail : rajes2301@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 14/10/2025
Revised on : 15/12/2025
Accepted on : 24/12/2025
Overall Similarity : 00% on 16/12/2025

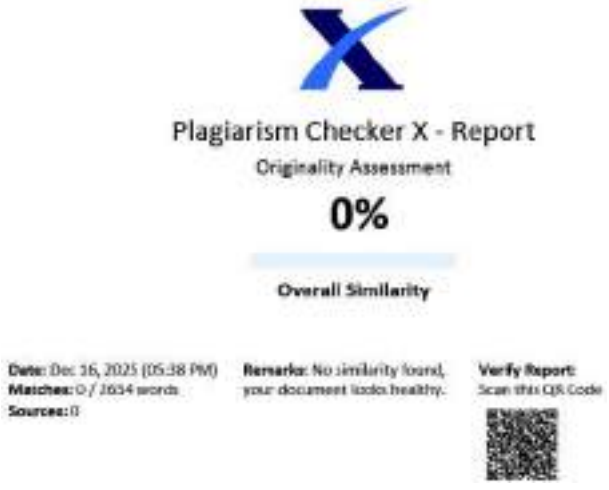

शोध सार

यह शोधपत्र शिक्षा के संदर्भ में स्वामी विवेकानंद के विचारों को स्पष्ट करने का प्रयास करता है तथा इक्कीसवीं सदी में उनके शैक्षिक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। विवेकानंद केवल वेदांत के सशक्त प्रवक्ता ही नहीं थे, बल्कि उन्होंने उसे व्यवहारिक जीवन में उतारने का भी प्रयास किया। उन्होंने भारत की अपूर्ण और दोषपूर्ण शिक्षा व्यवस्था के परिणामस्वरूप अनेक सामाजिक कुरीतियों के जन्म लेने की आशंका पहले ही व्यक्त कर दी थी। आधुनिक भारत में वैज्ञानिकता और यांत्रिक जीवन–शैली को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है, जिसके कारण मनुष्य एक प्रकार से मशीन बनता जा रहा है। इसके साथ ही नैतिक, आध्यात्मिक एवं धार्मिक मूल्यों का क्षय हो रहा है तथा सभ्यता के आधारभूत सिद्धांतों की उपेक्षा की जा रही है। विवेकानंद के अनुसार मनुष्य में पशुता, मानवता और देवत्व तीनों तत्व विद्यमान रहते हैं। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य आत्म–प्रयत्न, आत्म–बोध और समुचित प्रशिक्षण के माध्यम से मनुष्य को पशु प्रवृत्तियों से ऊपर उठाकर दिव्य स्तर तक पहुँचने में सहायक होना चाहिए। यदि आधुनिक भारत किसी क्षेत्र में असफल प्रतीत होता है, तो वह निश्चय ही आदर्श शिक्षा प्रणाली के द्वारा विकसित समाज की आधारशिला सच्चे और पूर्ण मानवों के निर्माण के क्षेत्र में है।

मुख्य शब्द

आत्म–साक्षात्कार, दिव्यता, मनुष्य–निर्माण शिक्षा, शिक्षा दर्शन.

परिचय

स्वामी विवेकानंद, भारत के महान आध्यात्मिक नेता और दार्शनिक, ने आधुनिक भारत की शिक्षा–दृष्टि को गहराई से प्रभावित किया। उनका शैक्षिक दृष्टिकोण

केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं था, बल्कि व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर आधारित था जिसमें बौद्धिक, भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक सभी आयाम सम्मिलित थे। विवेकानंद का मानना था कि शिक्षा न केवल व्यक्ति को ज्ञान और कौशल से सशक्त बनाए, बल्कि उसके भीतर सुप्त संभावनाओं को जागृत करे और उसे उद्देश्यपूर्ण एवं सार्थक जीवन जीने की क्षमता प्रदान करें।

शिक्षा के संबंध में विवेकानंद के मूल विचार

शिक्षा के आदर्श तथा उद्देश्य के विषय में स्वामी विवेकानंद ने कहा है – 'Education is the manifestation of the perfection already in man. (उस पूर्णता की अभिव्यक्ति को शिक्षा कहते है, जो पहले से ही सभी मनुष्यों में विद्यमान है।) उन्होंने समग्र शिक्षा पर बल दिया जो मन, शरीर और आत्मा के संतुलित विकास को सुनिश्चित करती है। उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्तियों की बौद्धिक क्षमताओं का पोषण करे, आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करे और जिज्ञासा एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करे साथ ही, यह नैतिक मूल्यों, चरित्र–निर्माण और सदाचार का भी संवर्धन करे। विवेकानंद ने शिक्षा को ऐसे साधन के रूप में देखा जो व्यक्तियों को जिम्मेदार नागरिक बनाए, जो समाज के कल्याण में योगदान दे सकें।

विवेकानंद के अनुसार, शिक्षा केवल शैक्षणिक अध्ययन या तथ्यों के संकलन तक सीमित नहीं होनी चाहिए। उनका तर्क था कि सच्ची शिक्षा व्यक्तियों को स्वतंत्र रूप से सोचने, प्रचलित मान्यताओं और विचारों पर प्रश्न उठाने तथा तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रेरित करे। उन्होंने छात्रों में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और आत्मखोज की भावना विकसित करने पर बल दिया, ताकि वे बाधाओं को पार कर अपनी वास्तविक क्षमता को पहचान सकें।

विवेकानंद की एक प्रमुख अवधारणा थी "मनुष्य–निर्माण शिक्षा"। शिक्षा सच्चा मनुष्य गढ़ने का एक उत्कृष्ट उपादान है। उनका विश्वास था कि शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति में निहित दिव्यता का उद्घाटन करना और उसे उसकी सच्ची प्रकृति का बोध कराना है। उन्होंने ऐसी शिक्षा व्यवस्था का समर्थन किया जो चरित्र–निर्माण, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक विकास को शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ जोड़कर देखे। उन्होंने सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, करुणा और परोपकार जैसे गुणों के संवर्धन पर विशेष जोर दिया।

विवेकानंद ने शिक्षा–प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका को भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना। उनके अनुसार, शिक्षक केवल जानकारी देने वाले नहीं, बल्कि छात्रों के मार्गदर्शक, प्रेरणादाता और विकास के सुगमकर्ता होने चाहिए। शिक्षक विद्यार्थियों को प्रेरित करें, उत्साहित करें और उन्हें स्वतंत्र शिक्षार्थी, आलोचनात्मक चिंतक तथा जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए सक्षम बनाएँ। विवेकानंद ने छात्र–केंद्रित शिक्षा की वकालत की, जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास और व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाए।

विवेकानंद की शिक्षा–दृष्टि का एक और महत्वपूर्ण पहलू था आध्यात्मिक और लौकिक ज्ञान का समन्वय। उनका मानना था कि शिक्षा में मानव अस्तित्व के आध्यात्मिक आयाम की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। विवेकानंद के अनुसार, आध्यात्मिकता केवल धार्मिक अनुष्ठानों या रूढ़ियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उच्चतर सत्य की खोज, आत्मसाक्षात्कार और स्वयं तथा दूसरों में निहित दिव्यता के बोध से जुड़ी हुई है। उनका तर्क था कि आध्यात्मिक मूल्यों और लौकिक ज्ञान का समन्वय व्यक्ति के समग्र विकास और समाज के कल्याण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

विवेकानंद ने शिक्षा को सामाजिक विषमताओं को दूर करने और वंचित वर्गों के उत्थान का साधन माना। उनका विश्वास था कि शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए, चाहे वह किसी भी जाति, संप्रदाय, लिंग या सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का हो। उन्होंने शिक्षा को व्यक्तियों को सशक्त बनाने और सामाजिक परिवर्तन का साधन बताया। विवेकानंद ने अज्ञान, अंधविश्वास और सामाजिक पूर्वाग्रहों को शिक्षा के माध्यम से मिटाने तथा अधिक समावेशी और समानतावादी समाज को प्रोत्साहित करने पर बल दिया।

इसके अतिरिक्त, विवेकानंद ने अनुभवात्मक शिक्षा और व्यावहारिक ज्ञान के महत्व को भी रेखांकित किया।

उन्होंने सैद्धांतिक शिक्षा के साथ व्यावहारिक अनुप्रयोग को जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे विद्यार्थी शैक्षणिक ज्ञान और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के बीच पुल बना सकें। उन्होंने शिक्षा–संस्थानों से आग्रह किया कि वे छात्रों को प्रत्यक्ष गतिविधियों, क्षेत्रीय कार्यों और सामाजिक सेवा में भागीदारी के अवसर प्रदान करें, जिससे उनमें सामाजिक उत्तरदायित्व और व्यावहारिक कौशल विकसित हो।

विवेकानंद के दृष्टिकोण में, शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं थी। वे प्रत्यक्ष अनुभवों द्वारा सीखने पर जोर देते थे। उनका मानना था कि विद्यार्थियों को सामाजिक, सांस्कृतिक और सामुदायिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करनी चाहिए। व्यावहारिक अनुभवों से विद्यार्थी संसार की गहरी समझ प्राप्त करेंगे और उनमें सहानुभूति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव विकसित होगा।

उन्होंने शारीरिक शिक्षा और खेलकूद को भी व्यक्ति के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक माना। उनका विश्वास था कि शारीरिक तंदुरुस्ती और खेल भावना एक सुदृढ़ शिक्षा का अभिन्न हिस्सा है। विवेकानंद ने पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा को शामिल करने की वकालत की, ताकि विद्यार्थी स्वस्थ और अनुशासित जीवनशैली अपनाएँ, टीमवर्क और निष्पक्ष खेल जैसे मूल्यों को आत्मसात करें तथा मन और शरीर के बीच गहरा संबंध विकसित कर सकें।

अंत में, विवेकानंद ने शिक्षा में वैश्विक दृष्टिकोण को विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने छात्रों को विविधता को अपनाने, विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों की सराहना करने तथा उदार मानसिकता विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उनका विश्वास था कि ऐसा शिक्षा–तंत्र जो अंतर्राष्ट्रीय समझ और सहयोग को बढ़ावा देता है, वह एक शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण विश्व की स्थापना में योगदान देगा।

यह ध्यान देने योग्य है कि विवेकानंद के शिक्षा संबंधी विचार केवल सैद्धांतिक धारणाएँ नहीं थे। उन्होंने स्वयं रामकृष्ण मिशन की स्थापना की एक ऐसा संगठन जो हर वर्ग के लोगों को शिक्षा और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए समर्पित था। रामकृष्ण मिशन के माध्यम से विवेकानंद की शिक्षा–दृष्टि व्यवहार में उतरी, जिसमें चरित्र–निर्माण, नैतिक मूल्यों और सामाजिक सेवा पर विशेष बल दिया गया।

निष्कर्षतः, स्वामी विवेकानंद के शिक्षा संबंधी विचार दूरदर्शी और समग्र थे, जिनमें बौद्धिक, नैतिक, शारीरिक और आध्यात्मिक आयाम सम्मिलित थे। उन्होंने बल दिया कि शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न रहे, बल्कि व्यक्तित्व के समग्र विकास को प्रोत्साहित करे। विवेकानंद ने आध्यात्मिक और लौकिक ज्ञान के समन्वय, चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्यों के महत्व, तथा शिक्षा–प्रक्रिया में व्यावहारिक अनुभवों की अनिवार्यता पर विशेष बल दिया। उनकी शिक्षा–दृष्टि का उद्देश्य व्यक्ति को एक उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने, समाज के कल्याण में योगदान देने तथा वैश्विक दृष्टिकोण अपनाने हेतु सशक्त बनाना था। अपनी शिक्षाओं और रामकृष्ण मिशन की स्थापना के माध्यम से विवेकानंद के विचार आज भी शैक्षिक प्रणालियों को प्रेरित और आकार प्रदान कर रहे हैं।

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति पर बल दिया, जो व्यक्ति और समाज दोनों को आकार देती है। उनका विश्वास था कि शिक्षा केवल सूचना या ज्ञान संग्रहण तक सीमित न हो, बल्कि यह व्यक्ति के समग्र विकास का माध्यम बने, जिससे उसकी अंतर्निहित दिव्यता प्रकट हो सके। विवेकानंद के अनुसार, सच्ची शिक्षा आत्म–खोज और आत्म–साक्षात्कार की प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को उसकी अंतर्निहित संभावनाओं को पहचानने और संसार में सार्थक योगदान देने योग्य बनाती है।

चरित्र–निर्माण और नैतिक विकास

विवेकानंद की शिक्षा–दर्शन का एक महत्वपूर्ण पहलू चरित्र–निर्माण और नैतिक विकास पर बल देना था। उन्होंने कहा कि शिक्षा को व्यक्तियों में नैतिक मूल्यों और सद्गुणों का संचार करना चाहिए, ताकि उनमें ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, करुणा और निःस्वार्थ भाव जैसी विशेषताएँ विकसित हों। विवेकानंद का मानना था कि सुदृढ़ चरित्र जीवन में सफलता और सुख का आधार है, जो व्यक्तियों को समाज के लिए सकारात्मक योगदान देने में सक्षम बनाता है।

चुनौतियों का सामना और आत्मविश्वास

विवेकानंद ऐसे शिक्षा–तंत्र के पक्षधर थे, जो विद्यार्थियों को चुनौतियों को स्वीकार करने और कठिनाइयों पर विजय पाने के लिए प्रेरित करे। उनका विश्वास था कि शिक्षा धैर्य, साहस और संकल्प की भावना विकसित करे। वे मानते थे कि असफलता और अवरोध विकास के लिए मूल्यवान अवसर हैं और इन्हें सफलता की ओर बढ़ने वाली सीढ़ी समझा जाना चाहिए। इस दृष्टिकोण से शिक्षा व्यक्ति को आत्मविश्वास और अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए साहस से परिपूर्ण करती है।

शिक्षा और आध्यात्मिकता का समन्वय

विवेकानंद की शिक्षा–दृष्टि का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू थाकृआध्यात्मिकता का समावेश। उनका मानना था कि शिक्षा को आध्यात्मिकता से अलग नहीं किया जा सकता, बल्कि इसे व्यक्ति की आत्मिक उन्नति को बढ़ावा देना चाहिए। विवेकानंद ने बल दिया कि शिक्षा व्यक्ति को अपनी वास्तविक प्रकृति और समस्त अस्तित्व की अंतर्निहित एकता को समझने में सहायक हो। उन्होंने ध्यान, आत्मचिंतन और आत्म–विश्लेषण जैसी साधनाओं द्वारा अंतर्मुखी होने की प्रेरणा दी। शिक्षा में आध्यात्मिक सिद्धांतों का समावेश करके विवेकानंद ऐसे व्यक्तियों को विकसित करना चाहते थे जो न केवल बौद्धिक रूप से प्रखर हों, बल्कि आत्मिक रूप से भी जाग्रत हों।

व्यावसायिक शिक्षा का महत्व

विवेकानंद ने यह भी माना कि व्यक्ति समाज में सार्थक योगदान देने और आजीविका अर्जित करने हेतु व्यावसायिक शिक्षा आवश्यक है। उनका विश्वास था कि शिक्षा व्यक्तियों को व्यावहारिक कौशल और उनके व्यवसाय से संबंधित ज्ञान प्रदान करे। विवेकानंद ने सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक प्रशिक्षण के संतुलित संयोजन पर बल दिया। वे अकादमिक शिक्षा के साथ–साथ व्यावसायिक शिक्षा को भी आवश्यक मानते थे, जिससे व्यक्ति अपने क्षेत्र में आवश्यक कौशल प्राप्त कर सके।

कला और रचनात्मकता का विकास

अकादमिक और व्यावसायिक शिक्षा के साथ–साथ विवेकानंद ने कलात्मक और रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर भी बल दिया। उनका मानना था कि शिक्षा में साहित्य, संगीत, कला और रचनात्मक अभिव्यक्ति के अन्य रूपों को प्रोत्साहित करना चाहिए। विवेकानंद कला को मानव स्वभाव के उच्चतर पक्षों को जाग्रत करने और पोषित करने का साधन मानते थे, जो कल्पनाशीलता, संवेदनशीलता और सौंदर्यबोध को विकसित करती है। शिक्षा में कला का समावेश व्यक्ति के व्यक्तित्व को संतुलित और बहुआयामी बनाता है।

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन

विवेकानंद ने शिक्षा की भूमिका को सामाजिक सौहार्द और न्याय के संवर्धन में भी महत्त्वपूर्ण माना। वे मानते थे कि शिक्षा व्यक्तियों को जाति, पंथ और सामाजिक विभाजन की संकीर्णताओं से ऊपर उठने में सहायता करे। उन्होंने ऐसे शिक्षा–तंत्र की वकालत की जो समानता, समावेशिता और सामाजिक उत्थान को प्रोत्साहित करे। विवेकानंद का विश्वास था कि शिक्षा अज्ञान को दूर कर सकती है, सामाजिक पूर्वाग्रहों को चुनौती दे सकती है और अधिक समानतापूर्ण समाज का निर्माण कर सकती है। उनके अनुसार, शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का उत्प्रेरक है, जो व्यक्तियों को समाज के कल्याण और वंचित वर्गों के उत्थान हेतु प्रेरित करती है।

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा संबंधी विचार

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा संबंधी विचारों में मानवता की निःस्वार्थ सेवा का विशेष महत्व था। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि व्यक्ति दूसरों की, विशेषकर वंचित और पिछड़े वर्गों की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करे। विवेकानंद ने शिक्षा को सामाजिक उत्तरदायित्व और सहानुभूति विकसित करने का साधन माना। उनका विश्वास था कि सच्ची शिक्षा केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसमें दूसरों के कल्याण के प्रति गहरी चिंता का भाव भी विकसित होना चाहिए। निःस्वार्थ सेवा के माध्यम से व्यक्ति समाज पर

सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है और उसके प्रगति–पथ में योगदान दे सकता है।

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को नेतृत्व–गुणों के विकास और ऐसे व्यक्तित्वों के निर्माण का साधन माना जो समाज के उत्थान में सक्रिय भूमिका निभा सकें। उनका विचार था कि शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना जागृत होनी चाहिए ताकि वे अपने समुदाय की समस्याओं से जुड़कर उनके समाधान में सक्रिय रूप से भाग ले सकें। विवेकानंद के अनुसार शिक्षा व्यक्तियों को सकारात्मक परिवर्तन का कारक बनाने का साधन है, जिससे वे सामाजिक चुनौतियों का सामना कर सकें और समाज को ऊँचाइयों की ओर अग्रसर कर सकें।

विवेकानंद के अनुसार शिक्षा को गहरे देशभक्ति–बोध और मातृभूमि के प्रति प्रेम को भी प्रोत्साहित करना चाहिए। उनका विश्वास था कि हर व्यक्ति को अपनी सांस्कृतिक धरोहर पर गर्व होना चाहिए और देश की उन्नति व प्रगति में योगदान देना चाहिए। उन्होंने ऐसे शिक्षा–तंत्र की वकालत की जो राष्ट्रीय गौरव, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रसेवा की भावना का निर्माण करे।

इसके अतिरिक्त विवेकानंद ने शिक्षा में व्यावहारिक ज्ञान और जीवन–कौशल की आवश्यकता पर बल दिया। उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्ति को जीवन की व्यावहारिक चुनौतियों से जूझने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करे। उन्होंने जीवन के विविध पहलुओंकृजैसे व्यक्तिगत संबंध, संप्रेषण–कौशल, आर्थिक प्रबंधन और भावनात्मक संतुलनकृपर शिक्षा के मार्गदर्शन को आवश्यक माना। विवेकानंद के अनुसार इस प्रकार का व्यावहारिक ज्ञान व्यक्तियों को संतुलित और पूर्ण जीवन जीने में समर्थ बनाता है।

विवेकानंद ने स्वाध्याय और आजीवन शिक्षा पर भी विशेष बल दिया। उनका विश्वास था कि शिक्षा केवल औपचारिक संस्थानों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया होनी चाहिए जो कक्षा–कक्ष की सीमाओं से परे विस्तारित हो। उन्होंने लोगों को प्रोत्साहित किया कि वे सक्रिय रूप से ज्ञान प्राप्त करें और विभिन्न स्रोतों से सीखें। विवेकानंद ने अध्ययन, पठन–पाठन और चिंतन को शैक्षिक यात्रा के आवश्यक अंग माना। उनका स्वप्न था ऐसा समाज जहाँ हर व्यक्ति आजीवन विद्यार्थी बने, अपने बौद्धिक क्षितिज को निरंतर विस्तारित करे और अपने–अपने क्षेत्र में प्रगति के साथ अद्यतन बना रहे। साथ ही विवेकानंद ने इस बात पर भी बल दिया कि शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए, चाहे वे किसी भी सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि से हों। उनका विश्वास था कि शिक्षा एक अधिकार है, कोई विशेषाधिकार नहीं। इसलिए उन्होंने ऐसे शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की आवश्यकता बताई जो समाज के वंचित और हाशिए पर पड़े वर्गों की आवश्यकताओं को पूरा करें। उनका मानना था कि समान शैक्षिक अवसर प्रदान करके ही समाज गरीबी के दुष्चक्र को तोड़ सकता है और व्यक्तियों को अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठने का अवसर दे सकता है।

इसके अलावा विवेकानंद ने शिक्षा में समग्र मूल्यांकन प्रणाली की आवश्यकता पर बल दिया, जो केवल शैक्षिक प्रदर्शन तक सीमित न हो। उनका विश्वास था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल अंक और डिग्री अर्जित करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर होना चाहिए। उन्होंने ऐसे मूल्यांकन की वकालत की जिसमें विद्यार्थी के चरित्र, नैतिक मूल्यों, व्यावहारिक कौशल और समग्र विकास का आकलन हो। विवेकानंद ने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करे जो केवल अकादमिक रूप से सफल न हों, बल्कि जिनमें ईमानदारी, नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुण भी विद्यमान हों।

निष्कर्ष

अतः स्वामी विवेकानंद के शिक्षा संबंधी विचारों का केंद्र बिंदु व्यक्ति का समग्र विकास था। उन्होंने चरित्र–निर्माण, आध्यात्मिक उन्नति, सामाजिक उत्तरदायित्व और व्यावहारिक ज्ञान पर बल दिया। उनका सपना था ऐसी शिक्षा–व्यवस्था जो नैतिक मूल्यों का निर्माण करे, नेतृत्व–गुणों को पोषित करे, सामाजिक समरसता को बढ़ावा दे और सीखने के प्रति प्रेम जगाए। विवेकानंद की शैक्षिक दार्शनिकता आज भी शिक्षाविदों और नीति–निर्माताओं को प्रेरित करती है और ऐसी शिक्षा की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती है जो व्यक्ति को सशक्त बनाकर समाज के उत्थान में सहायक हो।

संदर्भ सूची

1. विवेकानंद, स्वामी (1985) *विवेकानंद साहित्य,* (विभिन्न खंड) अद्वैत आश्रम, कोलकत्ता।
2. विवेकानंद, स्वामी (2016) *शिक्षा,* रामकृष्ण मठ, नागपुर, 28वॉ संस्करण।
3. विवेकानंद, स्वामी (2009) *शिक्षा का आदर्श,* रामकृष्ण मठ, नागपुर, प्रथम संस्करण।
4. Nirvedanand, Swami (2022) *Our Education,* Ramakrishna Mission, Kolkata.
5. Bharathi, A. (2012) Swami Vivekananda"s philosophy of education and its relevance in the present day, *International Journal of Educational Planning & Administration,* 2(4).

****